उसने हमें भविष्यवक्ता दिए

अध्याय 2

एक भविष्यवक्ता का कार्य

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय 1

कार्य के नाम 1

प्राथमिक शब्द 1

सहायक शब्द 2

कार्य परिवर्तन 4

राजशाही से पूर्व 5

राजशाही 5

निर्वासन 6

निर्वासन के पश्चात् 6

कार्य अपेक्षाएँ 7

लोकप्रिय नमूने 7

तान्त्रिक/शामन 7

ज्योतिषी 7

वाचा का नमूना 8

अतीत के विचार 8

समकालीन विचार 8

उपसंहार 10

उसने हमें भविष्यवक्ता दिए

अध्याय दो

एक भविष्यवक्ता का कार्य

परिचय

मेरी संस्कृति में जब दो व्यक्ति पहली बार आपस में मिलते हैं, तो सबसे पहले वे अपने नाम बताते हैं। परन्तु बहुत जल्द ही आमतौर पर वे यह सवाल पूछते हैं: "आप क्या करते हैं?" बहुत से अर्थों में, इस अध्याय में हम भविष्यवक्ताओं के बारे में यही पूछने जा रहे हैं। हम पूछना चाहते हैं: "पुराने नियम के भविष्यवक्ता किस प्रकार का कार्य करते थे?"

हमने इस अध्याय का शीर्षक "एक भविष्यवक्ता का कार्य" रखा है। जब हम एक भविष्यवक्ता के कार्य का अनुसंधान करते हैं तो हम तीन बातों को देखेंगे: पहला, भविष्यवक्ताओं के कार्य के नाम; दूसरा, कार्य में परिवर्तन-भविष्यवाणी में हुए परिवर्तन- और फिर अन्ततः भविष्यवक्ताओं के कार्य की अपेक्षाएँ-परमेश्वर अपने भविष्यवक्ताओं से क्या करने की अपेक्षा रखता था।

आइए हम पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के कार्य के नामों का अनुसंधान करने के द्वारा इस अध्याय की शुरूआत करते हैं।

कार्य के नाम

दैनिक जीवन में हम लोगों को बहुत से नामों से बुलाते हैं; वास्तव में, हम एक ही व्यक्ति को अलग-अलग बहुत से नामों से बुला सकते हैं। उदाहरण के लिए, हम किसी व्यक्ति को एक पासबान, एक खिलाड़ी, एक संगीतकार कह सकते हैं। क्यों? क्योंकि लोग जीवन में हर प्रकार के कार्य करते हैं। पुराने नियम में, पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के बारे में भी यही बात सच है। उन्हें बहुत से अलग-अलग नाम दिए गए हैं।

पुराने नियम में भविष्यवक्ताओं के लिए प्रयुक्त नामों का अनुसंधान करने के लिए हम दो मूलभूत श्रेणियों को देखेंगे। पहले, हम बाइबल में भविष्यवक्ता के लिए प्रयुक्त प्राथमिक शब्द को देखेंगे। और फिर, हम सहायक शब्दों के वर्गीकरण को देखेंगे जिनका बाइबल इस पद के लिए प्रयोग करती है। आइए पहले हम भविष्यवक्ताओं के लिए प्रयुक्त प्राथमिक शब्द को देखते हैं।

प्राथमिक शब्द

जब अधिकाँश मसीही "भविष्यवक्ता" शब्द को सुनते हैं तो उनमें यह सोचने की प्रवृत्ति होती है कि भविष्यवक्ता एक ऐसा व्यक्ति होता है जो केवल भविष्य के बारे में बताता है, एक ज्योतिष या आत्माओं से बात करने वाले जैसा। यह सत्य है कि पुराने नियम में भविष्यवक्ताओं ने भविष्य के बारे में बताया था, परन्तु उनकी भूमिका इससे कहीं वृहद् थी। वास्तव में, हमें यह सुराग मिलता है कि अंग्रेजी शब्द "प्रोफेट" में ऐसे अर्थ की क्षमता है जो केवल भविष्य के बारे में बताने वाले व्यक्ति से बढ़कर है।

अंग्रेजी भाषी लोगों को "प्रोफेट" शब्द पुराने नियम के यूनानी अनुवाद, सेप्टुजिन्ट से मिला है। हमें अक्सर यह अहसास नहीं होता है, परन्तु यूनानी शब्द प्रोफेटेस (προφήτης), जिससे हमें अंग्रेजी शब्द "प्रोफेट" मिला है, वह एक लचीला शब्द है। यह शब्द दो अवयवों का योग है। यूनानी शब्द प्रोफेटेस का दूसरा अवयव फेटेस (φητης) है, और यह बोलने के विचार को बताता है। यह बताता है कि

भविष्यवक्ता बहुत अधिक बोलते और लिखते थे। यह स्पष्ट है, परन्तु प्रोफेटेस का पहला अवयव "प्रो" दो दिशाओं में संकेत कर सकता है। एक तरफ इसका अर्थ "पहले से बोलना" या "भविष्यवाणी करना" हो सकता है, और दूसरी तरफ, इसका मतलब यह हो सकता है, कुछ ऐसा "बोलना," या "घोषणा करना" जो भविष्यवाणी है ही नहीं। इसका मतलब एक भविष्यवक्ता वह व्यक्ति हो सकता है जो भविष्यवाणी करता है या जो केवल घोषणा करता है। वास्तव में, पुराने नियम के भविष्यवक्ता दोनों कार्य करते थे। वे भविष्य के बारे में बोलते थे और अपने दिनों के बारे में भी साहस के साथ बोलते थे। मूलभूत नाम "भविष्यवक्ता" उन विविध कार्यों की ओर संकेत करता है जिन्हें ये भविष्यवक्ता करते थे।

जब हम इब्रानी पुराने नियम को देखते हैं तो हमें पता चलता है कि "भविष्यवक्ता" शब्द का और भी विस्तृत अर्थ था। सेप्टुजिन्ट में यूनानी शब्द प्रोफेटेस का प्रयोग इब्रानी भाषा के विशिष्ट शब्द नबी का अनुवाद करने के लिए किया गया है। प्राचीन मध्य-पूर्व की अन्य भाषाओं से हम जानते हैं कि नबी शब्द का अर्थ है, "बुलाया हुआ।" यह बहुत ही लचीला शब्द है, जो केवल इतना संकेत देता है कि भविष्यवक्ता परमेश्वर द्वारा बुलाया हुआ व्यक्ति था। वे साधारण लोग नहीं थे; परमेश्वर ने उन्हें बहुत सी विशेष सेवाओं के लिए बुलाकर अलग किया था।

नबी के रूप में भविष्यवक्ता के प्राथमिक पदनाम के अतिरिक्त, पुराने नियम में और भी कई सहायक शब्द भविष्यवक्ता के पद से जुड़े हैं। हम उनमें से कई महत्वपूर्ण सहायक शब्दों को देखेंगे।

सहायक शब्द

सबसे पहले, भविष्यवक्ताओं के लिए ऐबेद या सेवक शब्द का भी प्रयोग किया जाता था। पुराने नियम में बहुत से भिन्न-भिन्न प्रकार के लोगों को सेवक कहा जाता था, और यह शब्द हमेशा किसी न किसी प्रकार की आज्ञाकारिता और नम्रता का संकेत देता है। परन्तु यह नाम भविष्यवक्ताओं के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें अक्सर एक अफसर, विशेषत: शाही दरबार के अफसर का अर्थ निहित होता था। इस्राएल के राजाओं को भी परमेश्वर के सेवक कहा जाता है क्योंकि वे अधीनस्थ राजा थे जो परमेश्वर के स्वर्गीय, राज दरबार में अधिकृत पदों पर विराजमान थे।

भविष्यवक्ता परमेश्वर के राज दरबार में विशेष भूमिका निभाते हैं। वे स्वर्गीय सिंहासन के प्रतिनिधियों के रूप में सेवा करते थे। वे अधिकृत सेवक थे जो महान राजा के नाम से बोलते थे। इसी कारण दानिय्येल ने अंगीकार किया कि भविष्यवक्ताओं की अनदेखी करना इस्राएल का बड़ा पाप था। देखें दानिय्येल 9:6 में वह इसे किस प्रकार कहता है :

> हमने तेरे उन दासों, नबियों की नहीं सुनी, जो तेरे नाम से बातें करते थे। (दानिय्येल 9:6)

भविष्यवक्ता साधारण व्यक्ति नहीं थे। वे परमेश्वर के राज दरबार के सेवकों के रूप में स्वर्गीय सिंहासन का प्रतिनिधित्व करते थे।

इससे बढ़कर, दो निकटता से जुड़े हुए इब्रानी शब्द एक और विशेष भूमिका की ओर संकेत करते हैं जिसे भविष्यवक्ता निभाते थे। इब्रानी शब्द रोएह का अर्थ है "दर्शी" और यह होज़ेह शब्द से घनिष्ठता से जुड़ा है, जिसका अर्थ है "दर्शी" या "अवलोकन करने वाला।" 1 शमूएल 9:9 के अनुसार इस्राएल में राजशाही के उद्‌भव से पहले भविष्यवक्ता दर्शी कहलाते थे। इस्राएल में उससे पहले, आज के भविष्यवक्ता को दर्शी कहा जाता था। इसी प्रकार, 2 शमूएल 24:11 हमें बताता है कि गाद, जो दाऊद के समय का भविष्यवक्ता था, वह होज़ेह या दर्शी भी कहलाता था।

> यहोवा का वचन गाद नामक नबी के पास जो दाऊद का दर्शी था पहुँचा। (2 शमूएल 24:11)

भविष्यवक्ताओं के ये नाम उनके कार्य के बारे में क्या बताते हैं? ये पदनाम एक बहुत ही महत्वपूर्ण अनुभव की ओर संकेत करते थे जो परमेश्वर के वचन को प्राप्त करते समय अक्सर भविष्यवक्ताओं को होता था। भविष्यवक्ताओं को दर्शी कहा जाता था क्योंकि उन्हें स्वर्गीय स्थानों में देखने का सौभाग्य दिया गया था। 2 इतिहास की पुस्तक में, यिम्ला के पुत्र मीकायाह भविष्यवक्ता को अपनी भविष्यवाणी को स्पष्ट करने की चुनौती दी गई। जवाब में, मीकायाह ने स्वर्ग के एक दर्शन का वर्णन किया जिसे उसने प्राप्त किया था। 2 इतिहास 18:18-19 में हम भविष्यवक्ता द्वारा उसके वर्णन को देखते हैं जो उसने स्वर्ग में देखा था:

> मुझे सिंहासन पर विराजमान यहोवा और उसके दाहिने बाएँ खड़ी हुई स्वर्ग की सारी सेना दिखाई पड़ी। तब यहोवा ने पूछा, "इस्राएल के राजा अहाब को कौन ऐसा बहकाएगा, कि वह गिलाद के रामोत पर चढ़ाई करे?" किसी ने यह सुझाव दिया और किसी ने कुछ और। **(2 इतिहास 18:18-19)**

यह एक असाधारण परिच्छेद है, जो दिखाता है कि भविष्यवक्ता दर्शी क्यों कहलाते थे। वे स्वर्गीय क्षेत्रों में देखते थे। वे परमेश्वर की बात को सुनते थे। वे कार्यों को होते हुए देखते थे। वे स्वर्गीय स्थानों में परमेश्वर से बातचीत करते थे। और जब हम भविष्यवक्ताओं के बारे में सीखते हैं तो यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि इस प्रकार के स्वर्गीय अनुभव उनकी सेवकाईयों का केन्द्र थे।

भविष्यवक्ताओं के लिए कभी-कभार प्रयोग किया जाने वाला एक और इब्रानी शब्द सोफेह, या "पहरेदार" है। यह रूपक भविष्यवक्ताओं की तुलना प्राचीन इस्राएल के सामान्य पहरेदार की सेवा से करता था। प्राचीन संसार के नगरों में पहरेदार होते थे जो अपेक्षित और अनपेक्षित आगन्तुकों के लिए क्षितिज का निरीक्षण किया करते थे। भविष्यवक्ता भी शत्रुओं पर नजर रखने और आशीष या दण्ड के लिए परमेश्वर के आगमन पर नजर रखने के द्वारा यही किया करते थे। उदाहरण के लिए, यहेजकेल 3:17 में, परमेश्वर ने यहेजकेल भविष्यवक्ता से इस प्रकार कहा:

> हे मनुष्य की सन्तान, मैं ने तुझे इस्राएल के घराने के लिए पहरूआ नियुक्त किया है; तू मेरे मुँह की बात सुनकर, उन्हें मेरी ओर से चिताना। **(यहेजकेल 3:17)**

बाइबल के समयों में, शत्रुओं के आक्रमण या मित्र के आगमन की पहले से चेतावनी देना नगर के कार्यों के लिए महत्वपूर्ण था। परमेश्वर ने प्रकट किया कि उसके भविष्यवक्ता अक्सर आने वाले दण्ड और आशीषों पर नजर रखते थे ताकि लोगों को उसके लिए तैयार होने का अवसर मिल सके। भविष्यवक्ता स्वप्नों और दर्शनों में देखते थे और फिर मुड़कर लोगों को बताते थे कि क्षितिज में क्या है।

भविष्यवक्ताओं को कभी-कभार इब्रानी नाम मालाक भी दिया जाता था, जिसका अर्थ है, "सन्देशवाहक।" पुराने नियम के प्राचीन समयों में कोई फोन, ईमेल, या टीवी नहीं होते थे। लम्बी दूरी तक समाचार पहुँचाने का एकमात्र माध्यम मानवीय सन्देशवाहक थे, और ये सन्देशवाहक एक व्यक्ति, अक्सर राजा सेनापति से सन्देश को प्राप्त करते थे, और उस सन्देश को श्रोताओं तक पहुँचाते थे। बहुत बार सन्देशवाहकों का प्रयोग तब किया जाता था जब समाचार पहुँचाना अनिवार्य होता था। पुराना नियम भविष्यवक्ताओं को यह नाम इसलिए देता है क्योंकि वे परमेश्वर से सन्देश को प्राप्त करते थे और उस अनिवार्य सन्देश को परमेश्वर के लोगों तक पहुँचाते थे। उदाहरण के लिए, जब कुछ यहूदी बेबीलोन की बंधुवाई से यरूशलेम में लौटे, तो वे अत्यधिक निराश थे। अत:, परमेश्वर ने हाग्गै भविष्यवक्ता को बुलाया और उसे एक सन्देश के साथ भेजा। इस कारण, हाग्गै 1:13 इस प्रकार कहता है :

> तब यहोवा के दूत हाग्गै ने यहोवा से आज्ञा पाकर उन लोगों से यह कहा, "यहोवा की यह वाणी है, मैं तुम्हारे संग हूँ।" **(हाग्गै 1:13)**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

"सन्देशवाहक" नाम इस बात को स्पष्ट करता है कि भविष्यवक्ता परमेश्वर के लोगों को अपने स्वयं के विचार नहीं बताते थे। इसके विपरीत, वे यहोवा के प्रतिनिधियों के रूप में सेवा करते थे और परमेश्वर की ओर से बोलते थे।

अन्ततः, हमें बताना चाहिए कि भविष्यवक्ताओं को कई बार ईश एलोहीम, "परमेश्वर का भक्त" भी कहा जाता था। "परमेश्वर का भक्त" नाम का अनुवाद "परमेश्वर की ओर से भक्त" के रूप में भी किया जा सकता है। यह नाम भविष्यवक्ताओं द्वारा निभाई जाने वाली विशेष पवित्र भूमिका की ओर संकेत करता था। उन्हें परमेश्वर ने चुना और भेजा था। इस प्रकार, भविष्यवक्ताओं को परमेश्वर से विशेष सुरक्षा प्राप्त थी, और उनके पास विशेष अधिकार था। 2 राजा 1:12 में एलिय्याह भविष्यवक्ता ने इस नाम के महत्व को प्रकट किया था। वहाँ हम पढ़ते हैं :

> "यदि मैं परमेश्वर का भक्त हूँ तो आकाश से आग गिरकर तुझे, तेरे पचासों समेत भस्म कर डाले।" तब आकाश से परमेश्वर की आग उतरी और उसे उसके पचासों समेत भस्म कर दिया।" (2 राजा 1:12)

एलिय्याह के दैवीय अधिकार का प्रदर्शन उन लोगों के विरूद्ध आग के चमत्कारिक प्रकटीकरण से किया गया है जिन्होंने भविष्यवक्ता का विरोध किया था। एलिय्याह कोई साधारण व्यक्ति नहीं था। वह परमेश्वर की ओर से भेजा गया था। परमेश्वर उसके पक्ष में था।

हम देख चुके हैं कि पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के बहुत से नाम और शीर्षक थे। हमारे सर्वेक्षण ने पुराने नियम में प्रयुक्त विविध शीर्षकों में से केवल मुट्ठीभर शीर्षकों को छुआ है। परन्तु एक बात को हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं- भविष्यवक्ता अधिकाँश लोगों की सोच से कहीं बढ़कर थे। वे कोई तांत्रिक या ज्योतिष नहीं थे। उनके विविध प्रकार के नाम थे क्योंकि उनकी सेवाएँ भी विविध प्रकार की थीं। और यदि हम पुराने नियम की भविष्यवाणी को समझना चाहते हैं, तो हमें भविष्यवाणी के बारे में अपने विचार को विस्तृत करना होगा।

कार्य परिवर्तन

अब तक हम पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के विविध पदनामों को देख रहे थे। अब हमें हमारे दूसरे शीर्षक की ओर मुड़ना चाहिए: भविष्यवक्ता के कार्य में क्या परिवर्तन हुआ? मैं ने अपने जीवन में बहुत से काम किए हैं, और उनमें से प्रत्येक के बारे में एक बात सच थी- वे सब बदल गए हैं। कुछ समय तक मैं कार्य करता हूँ और फिर मुझे पता चलता कि कार्य अब पहले से भिन्न है। पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं का सच भी कुछ ऐसा ही है। उनके पास एक कार्य था, परन्तु बाइबल के इतिहास के विकसित होने के साथ, उनके कार्यों में परिवर्तन होता गया।

पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के कार्यों में हुए परिवर्तनों को समझने के लिए भविष्यवाणी को चार ऐतिहासिक अवस्थाओं में विभाजित करना सहायक है: राजशाही से पूर्व की अवधि- इस्राएल में राजाओं से पहले का समय; राजशाही की अवधि; निर्वासन की अवधि- बंधुवाई का समय; और निर्वासन के बाद की अवधि- जब इस्राएली निर्वासन से वापस लौटे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

राजशाही से पूर्व

आइए पहले हम राजशाही से पूर्व की अवधि के दौरान भविष्यवक्ताओं को देखते हैं। जब हम इस्राएल में किसी भी राजा से पहले के समय का अनुसंधान करते हैं, तो भविष्यवाणी की कई विशेषताओं को आसानी से देखा जा सकता है। पहली, उस समय के दौरान तुलनात्मक रूप से बहुत कम भविष्यवक्ता थे। उत्पत्ति से न्यायियों तक की पुस्तकों में नबी बहुत बार नहीं आता है। इन पुस्तकों में यह बीस से भी कम बार आया है और उनमें से कुछ भविष्य में आने वाले भविष्यवक्ताओं के संबंध में हैं। राजाओं से पहले के आरम्भिक समयों के दौरान भविष्यवक्ता बहुत कम थे।

इसके अतिरिक्त, राजशाही से पूर्व की अवधि के दौरान भविष्यवक्ता तुलनात्मक रूप से अनौपचारिक सेवाओं की विविधता को प्रदर्शित करते थे। उनका अधिकांश कार्य अल्पकालिक प्रतीत होता है, जो विशेष परिस्थितियों और विशेष समयों के लिए था। राजशाही से पूर्व की अवधि में नबी शब्द का प्रयोग विविध प्रकार के कार्य करने वाले विविध प्रकार के लोगों के लिए किया गया है।

राजशाही

इस्राएल में राजाओं के समय से पूर्व के धर्मशास्त्रीय इतिहास की आरम्भिक अवधि को पीछे छोड़ते हुए, हम पुराने नियम की भविष्यवाणी में एक नाटकीय परिवर्तन की ओर आते हैं। राजशाही का समय भविष्यवक्ताओं की भूमिका में परिवर्तनों सहित, इस्राएल राष्ट्र में बहुत से परिवर्तन लेकर आया। राजशाही से पूर्व के समय के विपरीत, इस समय के दौरान बड़ी संख्या में भविष्यवक्ता नजर आते हैं। शमूएल, राजाओं और इतिहास की पुस्तकों में हम बार-बार किसी एक या दूसरे भविष्यवक्ता के बारे में पढ़ते हैं। वास्तव में, बाइबल में इस अवधि के दौरान किसी भी अन्य समय से अधिक भविष्यवक्ता हैं।

राजशाही के समयों के दौरान भविष्यवक्ताओं की संख्या में वृद्धि के साथ, भविष्यवाणी भी अधिक औपचारिक हो गई। राजशाही के उद्‌भव के साथ, परमेश्वर ने भविष्यवक्ताओं को राजाओं के कार्यों पर नजर रखने और यह सुनिश्चित करने का काम सौंप दिया कि वे मूसा की व्यवस्था का पालन करते थे। यद्यपि परमेश्वर चाहता था कि इस्राएल में एक मानवीय राजा हो, परन्तु वह यह भी जानता था कि गिरे हुए मानवीय राजा राष्ट्र के लिए गम्भीर खतरा उत्पन्न करेंगे। मनुष्य यह नहीं जानते हैं कि बहुत अधिक ताकत को कैसे संभाला जाए। वे आमतौर पर भ्रष्ट हो जाते हैं और अपने अधीनस्थ लोगों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं।

इस्राएल के इतिहास के मामले में, राजाओं का भ्रष्ट होना बहुत खतरनाक था क्योंकि उनके कार्यों के कारण अक्सर पूरे देश पर परमेश्वर का दण्ड आता था। इस कारण, मूसा ने राजाओं की ताकत पर कुछ सीमाएँ लगाई थी। व्यवस्थाविवरण 17:14-20 में मूसा इस्राएल में राजाओं के लिए कुछ सीमाओं को निर्धारित करता है: इस्राएल में केवल वही राजा होना चाहिए जिसे यहोवा चुनता है। राजा तुम्हारे भाईयों में से होना चाहिए- दूसरे शब्दों में, एक इस्राएली होना चाहिए। राजा को अपने लिए बहुत अधिक संख्या में घोड़े नहीं रखने चाहिए। उसे लौटकर मिस्र में नहीं जाना चाहिए। राजा की बहुत सी पत्नियाँ नहीं होनी चाहिए- और इससे संभवत: मूसा का मतलब विदेशी पत्नियों से था। उसे बहुत अधिक मात्रा में चाँदी और सोना एकत्रित नहीं करना चाहिए। राजा के पास मूसा की व्यवस्था की एक प्रति होनी चाहिए। और राजा को अपने जीवन भर व्यवस्था को पढ़ना चाहिए। उसे सावधानी से मूसा की व्यवस्था के सारे वचनों का पालन करना चाहिए। और वह अपने आप को अपने भाईयों से श्रेष्ठ न माने।

नि:सन्देह, इस्राएल के राजाओं के इतिहास को पढ़ते ही हमें पता चल जाता है कि उन्होंने मूसा द्वारा निर्धारित की गई सीमाओं का पालन नहीं किया। और इसीलिए परमेश्वर ने राजाओं और उनके पीछे चलने वाले लोगों की अनाज्ञाकारिता के विरूद्ध गवाही देने के लिए भविष्यवक्ताओं को भेजा। राजाओं की ताकत पर लगाम लगाने के लिए भविष्यवक्ताओं के पास एक औपचारिक पद था। हम भविष्यवक्ताओं

और राजाओं के इस घनिष्ठ संबंध को बाइबल के बहुत से पृष्ठों पर देख सकते हैं। नातान भविष्यवक्ता दाऊद के सामने खड़ा हुआ। ओबेद ने आहाज से भविष्यवाणी की। एलिय्याह ने अहाब की आलोचना की।

अब, यह कहना जरूरी नहीं है, कि हर एक भविष्यवक्ता अधिकृत रूप से शाही दरबार में सेवा नहीं करता था। बहुत से सच्चे भविष्यवक्ताओं को उनके समय के राजाओं द्वारा अस्वीकृत कर दिया गया था। परन्तु, चाहे दरबार में हो या नगरों की सड़कों पर, राजशाही की अवधि के भविष्यवक्ताओं ने राजाओं और अन्य अधिकारियों को परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति जवाबदेह बनाए रखा। वे इस समय राजाओं और अधिकारियों द्वारा परमेश्वर की व्यवस्था के उल्लंघन का संकेत देकर परमेश्वर की सेवा करते थे।

अत: राजशाही के दौरान हम भविष्यवक्ताओं की संख्या में वृद्धि को देखते हैं और साथ ही हम देखते हैं कि राज दरबार में रहकर यहोवा की सेवा करने के द्वारा भविष्यवक्ताओं का कार्य अधिक औपचारिक हो जाता है।

निर्वासन

अब जबकि हम राजशाही के पूर्व से राजशाही के समय तक भविष्यवाणी में हुए विकास को देख चुके हैं, तो हमें अपना ध्यान निर्वासन की अवधि की ओर लाना चाहिए। निर्वासन के दौरान भविष्यवाणी का क्या हुआ? 722 ई.पू. में उत्तरी इस्राएल की राजधानी सामरिया अश्शुरियों से हार गई। और 586 ई.पू. में यरूशलेम बेबीलोन से हार गया। बहुत बड़ी संख्या में परमेश्वर के लोग अपने देश से दूसरे देशों में बंधुवाई में चले गए। इस समय के दौरान, भविष्यवक्ताओं की सेवकाईयों की दो विशेषताएँ थी। पहली, भविष्यवक्ताओं की गिनती में कमी आई। ऐसे भविष्यवक्ता अधिक नहीं थे जो इतने प्रमुख हों कि उनकी भविष्यवाणियों को बाइबल में लिखा जाता। उदाहरण के लिए, दानिय्येल और यहेजकेल इस समय के बहुत कम भविष्यवक्ताओं में सर्वाधिक विख्यात हैं।

नि:सन्देह, निर्वासन के साथ ही इस्राएल की राजशाही का भी अन्त हो गया, और इस कारण परमेश्वर के प्रति भविष्यवक्ता की सेवा में पुन: बहुत अधिक विविधता और अनौपचारिकता आ गई। अधिकांशत:, परमेश्वर के सच्चे भविष्यवक्ताओं ने अपना समय परमेश्वर के लोगों को निर्वासन और स्वदेश में वापस लौटने की संभावनाओं के बारे में समझाने में व्यतीत किया। अत:, हम देख सकते हैं कि निर्वासन के दौरान भविष्यवक्ताओं की संख्या कम थी और इस्राएल के राजाओं से उनका संबंध बहुत कम था।

निर्वासन के पश्चात्

निर्वासन की अवधि के पश्चात्, हम उन थोड़ी सी पीढ़ियों की ओर आते हैं जिन्होंने निर्वासन के पश्चात् की अवधि में भविष्यवाणिक गतिविधि को देखा था। निर्वासन के पश्चात् की अवधि के आरम्भिक अगुवे, यरूब्बाबेल ने देश में जागृति लाने की शुरुआत की। राजशाही की पुन: स्थापना की संभावना उठी। इसके परिणामस्वरूप, भविष्यवाणी में दो बातें हुई। भविष्यवक्ताओं की गिनती तुलनात्मक रूप से कम रही, परन्तु भविष्यवक्ताओं के बीच कुछ महत्वपूर्ण गतिविधि हुई। हाग्गै, जकर्याह और मलाकी इस अवधि के महत्वपूर्ण भविष्यवक्ता हैं जिन्हें हम जानते हैं।

भविष्यवक्ता पुन: एक अधिक औपचारिक भूमिका की ओर लौटने लगे। यरूब्बाबेल यहूदा का राज्यपाल बना और उसे आगामी राजा के रूप में देखा जाने लगा। इसके परिणामस्वरूप, हाग्गै और जकर्याह ने इस्राएली अधिकारियों को मन्दिर का पुनर्निर्माण करने के लिए प्रोत्साहित किया। मलाकी ने निरन्तर परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह करने के कारण पुन: स्थापित समुदाय के अधिकारियों और लोगों को

झिड़का। निर्वासन के पश्चात् की सम्पूर्ण अवधि के दौरान भविष्यवक्ताओं ने अगुवों और सामान्य लोगों पर नजर रखी और उन्हें परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए प्रोत्साहित किया।

अतः, राजशाही के उत्थान और पतन के साथ भविष्यवाणी की प्रमुखता और औपचारिकता में भी कमी या वृद्धि होती रही। जब हम किसी विशेष भविष्यवक्ता के वचनों को देखते हैं, तो हमें सर्वदा यह ध्यान रखना चाहिए कि हम राजशाही से पूर्व की अवधि में हैं, राजशाही की अवधि में, निर्वासन की अवधि में, या निर्वासन के बाद की अवधि में। भविष्यवक्ताओं के कार्य में हुए ये परिवर्तन उनके वचनों को समझने में हमारी सहायता करते हैं।

कार्य अपेक्षाएँ

अब तक हमने भविष्यवक्ताओं को दिए गए विभिन्न नामों और इस्राएल के इतिहास में भविष्यवाणी के विकास के तरीकों को देखा। इस समय, हम एक भविष्यवक्ता के कार्य की अपेक्षाओं पर एक नजर डालेंगे। परमेश्वर भविष्यवक्ताओं से क्या अपेक्षा रखता था? इस बिन्दू पर अनुसंधान करने के लिए हम दो विषयों को देखेंगेः, पहला, अपेक्षाओं के लोकप्रिय नमूने जिन्हें बाइबल के बहुत से व्याख्याकार भविष्यवक्ताओं पर लागू करते हैं, और दूसरा, वाचा का नमूना जिसे बाइबल स्वयं भविष्यवक्ता के कार्य की अपेक्षा के प्रमाप के रूप में पेश करती है।

लोकप्रिय नमूने

आइए पहले हम उन वर्गीकृत नमूनों को देखते हैं जिनका प्रयोग यह वर्णन करने के लिए किया जाता रहा है कि परमेश्वर भविष्यवक्ताओं से क्या अपेक्षा रखता था। व्याख्या के इतिहास के दौरान, यहूदियों और मसीहियों ने समान रूप से भविष्यवक्ताओं की भूमिकाओं को विविध तरीकों से समझा है। इनमें से कुछ नमूने सत्य के आयामों को स्पर्श करते हैं, लेकिन फिर भी वे इस बात का एक पूर्ण नमूना उपलब्ध करवाने में असफल हो जाते हैं कि परमेश्वर अपने भविष्यवक्ताओं से क्या चाहता था।

तान्त्रिक/शामन

बहुत से व्याख्याकारों ने पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की तुलना दूसरी संस्कृतियों के तान्त्रिकों से की है। डेल्फी की दैवीय वाणी या अन्य प्राचीन मध्य-पूर्वीय संस्कृतियों के तान्त्रिकों के समान, भविष्यवक्ताओं को ऐसे व्यक्तियों के रूप में देखा जाता है जो परमेश्वर तक पहुँच रखते हैं और व्यक्तिगत सवालों एवं प्रार्थनाओं के बारे में उसके प्रत्युत्तरों को बताते हैं। अब, मुझे लगता है कि हमें यह स्वीकार करना होगा कि बाइबल में भविष्यवक्ता समय-समय पर इस प्रकार की भूमिका को निभाते थे, परन्तु जैसा हम देखेंगे यह दृष्टिकोण एक ऐसे पूर्ण नमूने के लिए पर्याप्त नहीं है जो बताए कि भविष्यवक्ताओं से क्या करना अपेक्षित था।

ज्योतिषी

पुराने नियम में भविष्यवक्ताओं के कार्य के बारे में एक और लोकप्रिय विचार यह है कि वे मूलभूत रूप से भावी कहने वाले, या ज्योतिषी थे। जब किसी को यह जानना होता कि आगे क्या होगा तो इसे जानने के लिए वह भविष्यवक्ता के पास जाता था। पुनः, इस दृष्टिकोण में कुछ सच्चाई है क्योंकि भविष्यवक्ता अक्सर भविष्यवाणी किया करते थे कि भविष्य में क्या होने वाला है। परमेश्वर उन्हें अंतर्दृष्टि प्रदान करता था और वे उन्हें उपयुक्त लोगों को बताते थे। फिर भी हमें सावधान रहना चाहिए कि हम

भावी कहने को पुराने नियम की भविष्यवाणी का केन्द्र न मानें। पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं से इससे कहीं अधिक और महत्वपूर्ण अपेक्षाएँ थी।

वाचा का नमूना

भविष्यवाणी के ये लोकप्रिय नमूने कुछ हद तक हमारी सहायता कर सकते हैं परन्तु वे अपने भविष्यवक्ताओं के बारे में परमेश्वर की सर्वाधिक आधारभूत अपेक्षा को धुँधला भी करते हैं। भविष्यवाणी का वर्णन करने के लिए पुराने नियम द्वारा प्रयुक्त सर्वाधिक पूर्ण नमूना वाचा का नमूना है। जब हम भविष्यवाणी के लिए वाचा के नमूने का अनुसंधान आरम्भ करते हैं तो हमें याद रखना चाहिए कि सदियों से यहूदी और मसीही लोग वाचा को बाइबल का केन्द्रीय विचार मानते रहे हैं। परन्तु इन वर्षों के दौरान वाचा के धर्मशास्त्रीय विचार के बारे में हमारी समझ में सुधार हुआ है। अत:, पहले हमें वाचा के बारे में अतीत के विचारों को देखने के बाद समकालीन विचारों को देखना चाहिए।

अतीत के विचार

वाचा के बारे में अतीत के विचार सफल रहे हैं परन्तु उनमें उस ऐतिहासिक सन्दर्भ की बहुत कम जानकारी थी जिसमें से बाइबल की वाचा का विचार उत्पन्न हुआ था। हाल के समय तक हमें पुराने नियम की वाचाओं के प्राचीन मध्य-पूर्वी संदर्भों के बारे में अधिक जानकारी नहीं थी। इसलिए, धर्मविज्ञानियों के पास बाइबल में वाचा के बारे में अपने स्वयं के विचारों के आधार पर सोचने के अलावा और कोई विकल्प नहीं था। सामान्यत:, वे पुराने नियम की वाचाओं को रोमी कानून या समकालीन कानूनी व्यवस्थाओं के सन्दर्भ में पढ़ते थे। उदाहरण के लिए, जब हम सुनते हैं कि वाचा दो या अधिक व्यक्तियों के बीच का एक अनुबन्ध है, जैसा कि अक्सर कहा जाता है, तो यह या इससे मिलते-जुलते अन्य स्वरूप पूर्णत: गलत नहीं हैं, परन्तु बहुत अधिक अस्पष्ट हैं जिनसे हमें अधिक सहायता नहीं मिलती है।

समकालीन विचार

अतीत में, धर्मविज्ञानी वाचा को इस सामान्य अर्थ में समझते थे क्योंकि उनके पास बेहतर विकल्प नहीं थे। परन्तु वाचा की हमारी समकालीन समझ इन अतीत के स्वरूपों से कहीं अधिक पूर्ण है। हाल के दशकों में बहुत सी महत्वपूर्ण पुरातात्विक खोजों ने पुराने नियम में वाचा के बारे में हमारी समझ को बढ़ाया है। इनके कारण हम यह समझने के लिए बेहतर स्थिति में हैं कि वाचा किस प्रकार पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की कार्य से संबंधित अपेक्षाओं को निर्धारित करती थी। प्राचीन मध्य-पूर्व की खोजों ने प्रदर्शित किया है कि पुराना नियम इस्राएल के साथ परमेश्वर के संबंध का वर्णन अक्सर इस प्रकार करता है जो प्राचीन संसार में विद्यमान राजनैतिक सन्धियों से मिलते-जुलते थे। मध्य-पूर्व के प्राचीन संसार में, दो देशों के बीच अंतर्राष्ट्रीय सन्धियाँ होती थी। यद्यपि इन सन्धियों के स्वरूपों में विविधता थी, परन्तु एक निरन्तरता भी थी जिससे उस क्षेत्र के लोग जानते थे कि ये सन्धियाँ कैसे कार्य करती हैं। इस कारण, परमेश्वर ने इस्राएल से वाचाओं में संबंध में बनाया जो कई प्रकार से इन प्राचीन मध्य-पूर्वी सन्धियों के समानान्तर थीं।

बाइबल के समयों में, सन्धियाँ अक्सर दो समान स्तरों वाले देशों के बीच होती थी, और इन सन्धियों को हम समता सन्धियाँ कहते हैं। उदाहरण के लिए, मिस्र और अश्शूर के साम्राज्यों के बीच की सन्धि इतिहास के किसी समय में दो समान स्तर वालों के बीच की सन्धि हो सकती है। परन्तु अधिकतर, प्राचीन संसार में सन्धि एक बड़े सम्राट और किसी छोटे देश या शहर के छोटे राजा के बीच का अनुबन्ध होती थी। उदाहरण के लिए, कनानी राजाओं ने कई बार महान मिस्री साम्राज्य से सन्धि की थी। इस प्रकार की सन्धियों को सुजरेन-वासल सन्धियाँ कहा जाता है। “सुजरेन” शब्द का अर्थ है “जार” या ”सम्राट,” और वासल का अर्थ है उस महान सम्राट के सेवक। सुजरेन, या महान सम्राट संबंध के नियमों को

निर्धारित करते थे और सुरक्षा एवं देखभाल उपलब्ध करवाते थे। बदले में, वासल या सेवक राष्ट्र कर चुकाने या युद्ध में सहायता करने के द्वारा सुजरेन के प्रति अपनी वफादारी को प्रकट करते थे।

इन सुजरेन-वासल सन्धियों की एक महत्वपूर्ण विशेषता वह विशेष भूमिका थी जो सम्राट अपने प्रतिनिधियों या दूतों को देते थे। सुजरेन अक्सर अपने प्रतिनिधियों या राजदूतों को भेजते थे जो वासल देशों को उनकी सन्धि की शर्तों की याद दिलाते थे। ये दूत वाचा की सन्धि को लागू करने वालों के रूप में कार्य करते थे। वे वासल देशों से सन्धि की शर्तों का पालन करवाने का प्रयास करते थे, परन्तु अक्सर ऐसा नहीं होता था। अब, सम्राट अपने सेवक देशों के प्रति अत्यधिक धीरज रखते थे, परन्तु अन्त में, यदि एक वासल देश दूत के वचनों को सुनने से इन्कार कर देता तो महान सम्राट अपनी सेना के साथ आकर इन छोटे देशों को पराजित कर देता था।

प्राचीन मध्य-पूर्व में प्रतिनिधियों का कार्य पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के लिए एक नमूना उपलब्ध करवाता है। भविष्यवक्ता परमेश्वर की वाचा के प्रतिनिधियों, या उसकी वाचा को लागू करवाने वालों के रूप में सेवा करते थे। वे अपने सन्देश को दैवीय सम्राट के सिंहासन कक्ष से प्राप्त करते थे, और दैवीय सम्राट उनके द्वारा अपने सेवक देश से बात करता था। भविष्यवक्ता कभी-कभी वाचा का पालन करने के लिए इस्राएल की प्रशंसा करते थे, प्राथमिक रूप से वे यह चेतावनी देते थे कि निरन्तर उल्लंघन एक क्रोधी परमेश्वर के आक्रमण को लाएगा।

पुराने नियम की भविष्यवाणी में इस अंतर्दृष्टि पर आवश्यकता से अधिक बल देना कठिन होगा। भविष्यवक्ता परमेश्वर के प्रतिनिधि थे। वे वासल देश, अर्थात् इस्राएल के सामने महान सुजरेन के रूप में उसका प्रतिनिधित्व करते थे। वाचा के इस मूलभूत नमूने को याद रखने पर ही हम उस कार्य को समझने में समर्थ हो सकते हैं जो भविष्यवक्ता परमेश्वर के लिए करते थे।

यशायाह अध्याय 6 की सुपरिचित कहानी इस प्रतिनिधि नमूने के महत्व को स्पष्टता से प्रकट करती है। यद्यपि इस अध्याय में वाचा का स्पष्टत: वर्णन नहीं हैं, परन्तु यह विचार यशायाह अध्याय 6 के सम्पूर्ण प्रस्तुतिकरण का मार्गदर्शन करता है कि भविष्यवक्ता महान राजा की ओर से वाचा को लागू करवाने वाले दूत हैं। पहले पाँच वचनों में, यशायाह ने एक दर्शन देखा। इस दर्शन में, उसने परमेश्वर को अपने स्वर्गीय सिंहासन पर विराजमान देखा। यशायाह 6:1 में, भविष्यवक्ता ने बताया कि उसने परमेश्वर को

> ...बहुत ही ऊँचे सिंहासन पर विराजमान देखा; और उसके वस्त्र के घेर से मन्दिर भर गया। (यशायाह 6:1)

दर्शन देखने पर पद 5 में यशायाह कहता है :

> मैं ने सेनाओं के यहोवा महाराजाधिराज को अपनी आँखों से देखा है। (यशायाह 6:5)

यह परिच्छेद स्पष्ट करता है कि भविष्यवक्ता अपने परमेश्वर को कैसे समझता था। परमेश्वर अपने लोगों का राजा, सुजरेन या सम्राट था जो सबसे ऊँचा और सबका प्रभु था। भविष्यवक्ता को इस दैवीय सुजरेन की उपस्थिति में प्रवेश करने का सौभाग्य प्राप्त था।

परन्तु, हमारे लिए यह पूछना आवष्यक है कि यशायाह को परमेश्वर के सिंहासन कक्ष के तेजोमय दृश्य को देखने का निमंत्रण क्यों मिला था। उसने तुरन्त ही पहचान लिया क्यों। यशायाह ने अपने सुजरेन के सिंहासन की ओर देखा और 6:5 में यह कहा :

> हाय! हाय! मैं नष्ट हुआ; क्योंकि मैं अशुद्ध होंठ वाला मनुष्य हूँ; और अशुद्ध होंठ वाले मनुष्यों के बीच में रहता हूँ। (यशायाह 6:5)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यशायाह को दैवीय सुजरेन की उपस्थिति में इसलिए बुलवाया गया था क्योंकि वासल देश में गम्भीर पाप व्याप्त हो गया था। यही वह सामान्य कारण है जिसके लिए पुराने नियम में भविष्यवक्ताओं को बुलाया जाता था। परमेश्वर के लोग अपनी वाचा के यहोवा के प्रति वफादारी से भटक जाते हैं और इसीलिए वाचा को लागू करवाने के लिए परमेश्वर अपने भविष्यवक्ताओं को बुलाता है।

6:6-7 में एक साराप यशायाह के पास आता है और जलते हुए अँगारे से उसके होठों को शुद्ध करता है। यह शुद्धिकरण यशायाह के लिए परमेश्वर के वक्ता के रूप में उसकी सेवा करना संभव बनाता है। फिर पद 8 से 13 में यशायाह वाचा को लागू करवाने के अधिकार को प्राप्त करता है। यशायाह 6:8 में यहोवा कहता है :

> **मैं किस को भेजूँ, और हमारी ओर से कौन जाएगा? (यशायाह 6:8)**

यहोवा चाहता है कि कोई इस्राएल के लिए उसका दूत बने, और यशायाह इन विख्यात शब्दों में उत्तर देता है :

> **मैं यहाँ हूँ! मुझे भेज। (यशायाह 6:8)**

यशायाह एक ऐसे व्यक्ति के रूप में अपनी बुलाहट को स्वीकार करता है जिसे महान सुजरेन की ओर से वासल देश इस्राएल में भेजा गया है। यशायाह की शेष पुस्तक बताती है कि भविष्यवक्ता ने अपने इस कार्य को कैसे किया। उसने राजाओं से और दूसरे अगुवों से तथा लोगों से बात की। उसने वाचा के उल्लंघनों की भर्त्सना की और परमेश्वर के लोगों के लिए वाचा की आशीषों की आशा को प्रस्तुत किया। यहाँ यशायाह 6 में दिया गया प्रारूप पुराने नियम की भविष्यवाणी में हर जगह प्रकट होता है। भविष्यवक्ता वे प्रतिनिधि थे जो सिंहासन पर विराजमान महान सुजरेन से संदेशों को प्राप्त करते थे और उन संदेशों को वासल देश, इस्राएल तक पहुँचाते थे।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने भविष्यवक्ताओं के कार्य को देखने के द्वारा उनके अनुभव का अनुसंधान किया है। हम उन्हें दिए गए बहुत से पदनामों को भी देख चुके हैं, और हमने यह भी देखा कि इस्राएल के इतिहास के दौरान भविष्यवक्ता के पद में कैसे विकास और परिवर्तन हुआ। अन्ततः, हमने उन मूलभूत अपेक्षाओं को देखा जो एक भविष्यवक्ता के कार्य का नियमन करती थीं।

पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के बारे में अत्यधिक असमंजस है, और हम इस असमंजस से बच सकते हैं यदि हम केवल उनके कार्य के नामों, उनमें हुए परिवर्तनों, और भविष्यवक्ताओं के बारे में परमेश्वर की इस अपेक्षा को याद रखें कि वे उसकी वाचाओं का प्रतिनिधित्व करेंगे। यदि हम भविष्यवक्ताओं के बारे में इन बातों को याद रखते हैं तो हम उनके वचन को आज हमारे संसार में लागू करने में समर्थ हो जाएँगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।